संपादकीय

महासंवादः कुम्भ का मुख्य उद्देश्य

वैश्विक स्तर के बौद्धिक वर्ग में प्रामाणिक रूप से स्थापित हो चुका है कि दक्षिण एशिया के जिस भाग को वृहत भारतवर्ष कहा जाता है उस भूमि पर कम-से-कम पाँच हजार वर्ष पूर्व उत्कृष्ट सभ्यता का उद्‌गम हुआ था। इस संस्कृति को पनपने में भी सैकड़ों वर्ष लगे होंगे परन्तु उसका उत्कृष्ट रूप लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व तो सिद्ध ही है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कहा जा सकता है कि उस समय के समाज में ज्ञान-विज्ञान एवं कलाओं को समझने और परखने का पूरा विवेक जागृत था। भारतीय ऋषि-मुनियों ने न केवल प्रकृति के नियमों को समझा वरन उन्हीं नियमों के अनुसार मानव के जीवन का एक दर्शन भी प्रस्तुत किया था। सैकड़ों वर्ष तक भारत के समाज ने उस प्रकृतिबद्ध जीवन को जिया था। पदार्थ की प्रकृति, प्रकृति के नियम, मानव व्यवहार का मनोविज्ञान, अंतरिक्ष में ग्रहों की गति इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्रमाणित ज्ञान-विज्ञान उपलब्ध होता है।

अन्तरिक्ष में विभिन्न ग्रहों और नक्षत्रों की निरन्तर बदलती स्थितियों का सौ प्रतिशत तथ्यात्मक आंकलन करने की विधियाँ उस समय उपलब्ध थीं। इन आकाशीय खण्डों का पृथ्वी के जल और थल पर ऊर्जात्मक प्रभावों का ज्ञान उस समय के वैज्ञानिकों को पूर्णरूप से था। नक्षत्रों की इन्हीं गणनाओं के आधार पर उस समय के समाज ने कुम्भ की प्रथा का निर्माण किया था। कुम्भ की कल्पना मात्र मेले की नहीं है। यह बहुउद्‌देश्यीय परियोजना है। सबसे बड़ा उद्‌देश्य तो महासंवाद स्थापित करने का है। वर्षों तप करके तपस्वी कुम्भ में जिज्ञासुओं को नये ज्ञान की शिक्षा-दीक्षा देते थे। यही गृहस्थ और संत जिज्ञासु वापस अपने-अपने स्थान पर जाकर आम समाज तक उस ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते थे। वैज्ञानिक व दार्शनिक रूपी ऋषि-मुनियों द्वारा अर्जित ज्ञान व विज्ञान को जनमानस तक पहुँचाने का कार्य कुम्भ का मुख्य उद्‌देश्य था।

कुम्भ को, ऋषि-मुनियों ने बाह्य ऊर्जा को आध्यात्मिक शक्तियों में परिवर्तित करने का भी उपाय बनाया। कुम्भ के समय तपस्वी ऐसे स्थानों पर एकत्रित होते हैं जहाँ ऊर्जा का केन्द्रीयकरण होता है। वर्तमान विज्ञान के आधार पर यह कहा जाता है कि कुम्भ के समय 0 से 30 अक्षांश पर जलाधाराओं से पृथ्वी का अपकेन्द्रीय बल(सेन्ट्रीफ्यूगल फोर्स) लगभग 90 अर्थात पूर्णशक्ति से उपलब्ध होता है। ब्रम्हाण्ड की यह स्थिति मनुष्य के शरीर में केन्द्रित होकर मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाती है। वैसे तो जलाशयों और जलधाराओं में वर्ष में कई बार एकत्रीकरण होता है परन्तु बृहस्पति, पृथ्वी और सूर्य की परम विशिष्ट परिस्थितियों में उज्जैन, हरिद्वार, प्रयाग और नासिक के कुम्भ होते हैं। तमिलनाडु में भी कुम्भाकरण में जलाशय पर एकत्रीकरण होता है। शोध का विषय है कि नक्षत्रों की इन परिस्थितियों में ही यह कुम्भ क्यों होता है?

हर कुम्भ के समय कल्पवास का भी प्रचलन भारतीय समाज में है। अनेक गृहस्थ और सन्यासी संकल्प करते हैं कि कुम्भ के 42 दिन वे उसी कुंभ स्थान पर ही निवास करेंगे। एक समय खुद का पकाया हुआ भोजन करेंगे और शेष समय जलधाराओं के आसपास आध्यात्मिक चिन्तन, श्रवण और मंथन करेंगे। मनुष्य की आत्मा की आध्यात्मिक यात्रा का यह बड़ा उत्सव है। भारतीय समाज में कल्पवास करना अत्यन्त पुण्य का कार्य माना जाता है।

हम भारतीयों के लिए कुम्भ इतने अचरज का विषय नहीं है क्योंकि यह हमारी अपनी ही संस्कृति, विश्वास और रीति-रिवाज का भाग है इसलिए हमारे संस्कारों में है। गैर भारतीयों के लिए यह अत्यंत कौतूहल का विषय है। विश्व के कुछ विख्यात-कुख्यात तथाकथित शैक्षणिक संस्थान कुम्भ के विषय में दुष्प्रचार करते हैं। दोष उनका नहीं है, कहीं हम उनको समझाने में कमजोर पड़ जाते हैं, इसलिए वो कुम्भ की अधूरी या विकृत व्याख्या करते हैं। बौद्धिक और शैक्षणिक जगत का धर्म है कि असत्य और विकृत धारणाओं का निदान करें और कुम्भ का पूर्णसत्य पूरे विश्व के सामने प्रस्तुत करें। कुछ-कुछ यही प्रयास इस प्रकाशन में किया गया है।

प्रो. बृज किशोर कुठियाला
कुलपति